1 संस्कृत व्याकरण

सन्धि, शब्द-रूप, धातु-रूप, प्रत्यय, विभक्ति, समास

(क) सन्धि

सन्धि का साधारण अर्थ है मेल। दो वर्णों के निकट आने से उनमें जो विकार होता है उसे सन्धि कहते हैं। इस प्रकार की सन्धि के लिए दोनों वर्णों का निकट होना आवश्यक है, क्योंकि दूरवर्ती शब्दों या वर्णों में सन्धि नहीं होती है। वर्णों की इस निकट स्थिति को ही सन्धि कहते हैं। अत: संक्षेप में यही समझना चाहिए कि "दो वर्णों के पास-पास आने से उनमें जो परिवर्तन या विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं।" **जैसे–**

हिम	+	आलय:	=	हिमालय:
रमा	+	ईश:	=	रमेश:
सूर्य	+	उदय:	=	सूर्योदय:

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिम में म के 'अ' और आलय के 'आ' इन दोनों के मिलने से आ होकर हिमालय: रूप बनता है। इसी प्रकार रमा के 'आ' और ईश: के 'ई' – इन दोनों वर्णों के मेल से 'ए' होकर रमेश: शब्द बना है तथा सूर्य के 'अ' और उदय के 'उ' आपस में मिलने से 'ओ' होकर सूर्योदय: रूप बन गया है। इसी प्रकार अन्यत्र भी समझना चाहिए।

यह सन्धि स्वर, व्यञ्जन और विसर्ग भेद से तीन प्रकार की होती है। स्वर सन्धि में कतिपय मुख्य सन्धियों का परिचय पिछली कक्षाओं में मिल चुका है। यहाँ उनसे भिन्न कुछ सन्धियों से परिचय कराया जायगा।

स्वर सन्धि

परिभाषा– स्वर (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ) के सामने स्वर आने पर इनके मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे 'स्वर सन्धि' कहते हैं। उदाहरणार्थ–

राम	+ आधार:	=	रामाधार:	(अ + आ = आ)
विद्या	+ आलय:	=	विद्यालय:	(आ + आ = आ)
नर	+ इन्द्र:	=	नरेन्द्र:	(अ + इ = ए)
देश	+ उद्धार:	=	देशोद्धार:	(अ + उ = ओ)
राज	+ ऋषि:	=	राजर्षि:	(अ + ऋ = अर्)

स्वर सन्धि के भेद–स्वर सन्धि के पाँच भेद होते हैं–(१) दीर्घ सन्धि (२) गुण सन्धि (३) वृद्धि सन्धि (४) यण् सन्धि (५) अयादि सन्धि।

(१) दीर्घ सन्धि

सूत्र–अक: सवर्णे दीर्घ:।

नियम–यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर अ, इ, उ, ऋ के बाद क्रमश: ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आयें तो दोनों मिलकर क्रमश: आ, ई, ऊ, ऋ हो जाते हैं।

उदाहरणार्थ–

धर्म:	+ अर्थ:	=	धर्मार्थ:	(अ + अ = आ)
भग्न	+ अवशेष:	=	भग्नावशेष:	(अ + अ = आ)
परम	+ अर्थ:	=	परमार्थ:	(अ + अ = आ)
कृष्ण	+ अयन:	=	कृष्णायन:	(अ + अ = आ)
हर्ष	+ अतिरेक:	=	हर्षातिरेक:	(अ + अ = आ)
परम	+ अवसर:	=	परमावसर:	(अ + अ = आ)
मुर	+ अरि	=	मुरारि	(अ + अ = आ)
शरण	+ अर्थी	=	शरणार्थी	(अ + अ = आ)

अजर	+	अमर	=	अजरामर	(अ	+	अ	=	आ)
ज्ञान	+	अर्जन	=	ज्ञानार्जन	(अ	+	अ	=	आ)
काम	+	अरि	=	कामारि	(अ	+	अ	=	आ)
राम	+	आनन्द	=	रामानन्द	(अ	+	अ	=	आ)
मंगल	+	आचरण	=	मंगलाचरण	(अ	+	अ	=	आ)
धन	+	आदेश	=	धनादेश	(अ	+	अ	=	आ)
परम	+	आत्मा	=	परमात्मा	(अ	+	अ	=	आ)
दीप	+	आलोक	=	दीपालोक	(अ	+	अ	=	आ)
अश्व	+	आरोही	=	अश्वारोही	(अ	+	अ	=	आ)
निर	+	आश्रित	=	निराश्रित	(अ	+	अ	=	आ)
सत्य	+	आग्रह	=	सत्याग्रह	(अ	+	अ	=	आ)
दिव्य	+	आत्मा	=	दिव्यात्मा	(आ	+	अ	=	आ)
विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी	(आ	+	अ	=	आ)
यथा	+	अवसर	=	यथावसर	(अ	+	अ	=	आ)
तथा	+	अपि	=	तथापि	(आ	+	अ	=	आ)
करुणा	+	आर्द्र	=	करुणार्द्र	(आ	+	आ	=	आ)
विद्या	+	आलय	=	विद्यालय	(आ	+	आ	=	आ)
सदा	+	आचार	=	सदाचार	(आ	+	आ	=	आ)
रवि	+	इन्द्र	=	रवीन्द्र	(इ	+	इ	=	ई)
सुधि	+	इन्द्र	=	सुधीन्द्र	(इ	+	इ	=	ई)
कपि	+	ईश	=	कपीश	(इ	+	ई	=	ई)
गिरि	+	ईश	=	गिरीश	(इ	+	ई	=	ई)
मुनि	+	ईश	=	मुनीश	(इ	+	ई	=	ई)
क्षिति	+	ईश	=	क्षितीश	(इ	+	ई	=	ई)
नदी	+	इन्द्र	=	नदीन्द्र	(ई	+	इ	=	ई)
मही	+	इन्द्र	=	महीन्द्र	(ई	+	इ	=	ई)
रजनी	+	ईश	=	रजनीश	(ई	+	ई	=	ई)
नदी	+	ईश	=	नदीश	(ई	+	ई	=	ई)
भानु	+	उदय	=	भानूदय	(उ	+	उ	=	ऊ)
लघु	+	उर्मि	=	लघूर्मि	(उ	+	उ	=	ऊ)
वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव	(ऊ	+	उ	=	ऊ)
पितृ	+	ऋण:	=	पितॄण:	(ऋ	+	ऋ	=	ॠ)

(२) गुण सन्धि

सूत्र– आद्गुण:–यदि अ अथवा आ के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आवे तो अ और इ मिलकर ए, अ और उ मिलकर ओ, अ और ऋ मिलकर अर् तथा अ और ऌ मिलकर अल् हो जाता है।

उदाहरणार्थ–

राम	+	इन्द्र	=	रामेन्द्र	(अ	+	इ	=	ए)
देव	+	इन्द्र	=	देवेन्द्र	(अ	+	इ	=	ए)
जित	+	इन्द्रिय	=	जितेन्द्रिय	(अ	+	इ	=	ए)
भारत	+	इन्दु	=	भारतेन्दु	(अ	+	इ	=	ए)
नर	+	इन्द्र	=	नरेन्द्र	(अ	+	इ	=	ए)
उप	+	इन्द्र	=	उपेन्द्र	(अ	+	इ	=	ए)
परम	+	ईश्वर	=	परमेश्वर	(अ	+	ई	=	ए)

महा	+ ईश	=	महेश	(आ	+	ई	=	ए)
रमा	+ ईश	=	रमेश	(अ	+	ई	=	ए)
गण	+ ईश	=	गणेश	(अ	+	ई	=	ए)
सुर	+ ईश	=	सुरेश	(अ	+	ई	=	ए)
देव	+ ईश	=	देवेश	(अ	+	ई	=	ए)
त्रिलोक	+ ईश्वर	=	त्रिलोकेश्वर	(अ	+	ई	=	ए)
यथा	+ इष्ट	=	यथेष्ट	(आ	+	इ	=	ए)
महा	+ इन्द्र	=	महेन्द्र	(आ	+	इ	=	ए)
महा	+ ईश्वर	=	महेश्वर	(आ	+	ई	=	ए)
आत्म	+ उत्सर्ग	=	आत्मोत्सर्ग	(अ	+	उ	=	ओ)
लोक	+ उक्ति	=	लोकोक्ति	(अ	+	उ	=	ओ)
लोक	+ उत्तर	=	लोकोत्तर	(अ	+	उ	=	ओ)
चरम	+ उन्नति	=	चरमोन्नति	(अ	+	उ	=	ओ)
सर्व	+ उत्तम	=	सर्वोत्तम	(अ	+	उ	=	ओ)
विकास	+ उन्मुख	=	विकासोन्मुख	(अ	+	उ	=	ओ)
सूर्य	+ उदय	=	सूर्योदय	(अ	+	उ	=	ओ)
सर्व	+ उदय	=	सर्वोदय	(अ	+	उ	=	ओ)
चन्द्र	+ उदय	=	चन्द्रोदय	(अ	+	उ	=	ओ)
भाग्य	+ उदय	=	भाग्योदय	(अ	+	उ	=	ओ)
देश	+ उद्धार	=	देशोद्धार	(अ	+	उ	=	ओ)
पतन	+ उन्मुख	=	पतनोन्मुख	(अ	+	उ	=	ओ)
समय	+ उचित	=	समयोचित	(अ	+	उ	=	ओ)
महा	+ उत्सव	=	महोत्सव	(आ	+	उ	=	ओ)
गंगा	+ उद्कम	=	गंगोद्कम	(आ	+	उ	=	ओ)
जल	+ ऊर्मि	=	जलोर्मि	(अ	+	ऊ	=	ओ)
गंगा	+ ऊर्मि	=	गंगोर्मि	(आ	+	ऊ	=	ओ)
राज	+ ऋषि	=	राजर्षि	(अ	+	ऋ	=	अर्)
महा	+ ऋषि	=	महर्षि	(आ	+	ऋ	=	अर्)
ब्रह्म	+ ऋषि	=	ब्रह्मर्षि	(अ	+	ऋ	=	अर्)
देव	+ ऋषि	=	देवर्षि	(अ	+	ऋ	=	अर्)
तव	+ ऌकार	=	तवल्कार	(अ	+	ऌ	=	अल्)

(३) यण् सन्धि

सूत्र– इकोयणचि–ह्रस्व अथवा दीर्घ इ, उ, ऋ तथा ऌ के बाद कोई असमान स्वर आये तो इ का य, उ का व् और ऋ कर र् तथा ऌ का ल् हो जाता है।

उदाहरणार्थ–

रीति	+ अनुसार	=	रीत्यानुसार	(इ	+	अ	=	य)
इति	+ आदि	=	इत्यादि	(इ	+	आ	=	या)
प्रति	+ आशा	=	प्रत्याशा	(इ	+	आ	=	या)
यदि	+ अपि	=	यद्यपि	(इ	+	अ	=	य)
प्रति	+ एक	=	प्रत्येक	(इ	+	ए	=	ये)
प्रति	+ उत्तर	=	प्रत्युत्तर	(इ	+	उ	=	यु)
देवी	+ आदेश	=	देव्यादेश	(ई	+	आ	=	या)
मधु	+ अरि	=	मध्वरि	(उ	+	अ	=	व)
सु	+ आगतम	=	स्वागतम	(उ	+	आ	=	वा)

गुरु	+	आदेश	=	गुर्वादेश	(उ	+	आ	=	वा)
वधू	+	आगमन	=	वध्वागमन	(ऊ	+	आ	=	वा)
पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा	(ऋ	+	आ	=	रा)
मातृ	+	आज्ञा	=	मात्राज्ञा	(ऋ	+	आ	=	रा)
ऌ	+	आकृति	=	लाकृति	(ऌ	+	आ	=	ला)

(४) अयादि :– एचोऽयवायावः

जब ए, ऐ, ओ और औ (एच्) के आगे कोई स्वर आवे, तो उन (एच्) के स्थान में क्रमशः अय्, आय् तथा अव, आव् हो जाते हैं। अर्थात् ए के स्थान में अय्, ऐ के स्थान में आय्, ओ के स्थान में अव् और औ के स्थान में आव् हो जाते हैं। **जैसे–**

ने + अनम् = नयनम्
नै + अकः = नायकः
पो + अनः = पवनः
पौ + अकः = पावकः
शे + अनम् = शयनम्
भो + अनम् = भवनम्
नौ + इकः = नाविकः
गै + अकः = गायकः

(५) पूर्वरूप :– एङः पदान्तादति

यदि किसी पद के अन्त में एकार या ओकार (एङ्) हो और उसके बाद में अ आया हो तो दोनों ही स्थान में क्रमशः एकार तथा ओकार (पूर्व रूप) हो जाते हैं, चिह्न अ की पूर्व उपस्थिति के सूचक के रूप में (ऽ) रख दिया जाता है। **जैसे–**

हरे + अव = हरेऽव (हे हरि ! रक्षा कीजिए)
विष्णो + अव = विष्णोऽव (हे विष्णु! रक्षा कीजिए)

(६) पररूप :– एङि पररूपम्

यदि अकारान्त उपसर्ग के बाद ऐसी धातु जिनके आरम्भ में ए अथवा ओ हो तो उपसर्ग का अ तथा धातु के ए या ओ दोनों के स्थान पर 'ए' या 'ओ' हो जाता है; **जैसे–**

प्र + एजते = प्रेजते
उप + ओषति = उपोषति

[संकेत :–दीर्घ, गुण, यण् एवं अयादि सन्धि का ही अध्ययन पाठ्यक्रमानुसार सामान्य हिन्दी के छात्र-छात्राओं के लिए आवश्यक है।]

हल् (व्यञ्जन सन्धि)

(१) स्तोः श्चुनाश्चुः

यदि सकार या त वर्ग के साथ शकार या च वर्ग आये तो सकार और त वर्ग के स्थान में क्रम से शकार और च वर्ग हो जाते हैं; **जैसे–**

हरिस्	+	शेते	=	हरिश्शेते	(हरि सोता है)
रामस्	+	चिनोति	=	रामश्चिनोति	(राम इकट्ठा करता है)
सत्	+	चित्	=	सच्चित्	(सत्य और ज्ञान)
सत्	+	चयनम्	=	सच्चयनम्	(सही चुनाव)

(२) ष्टुनाष्टुः

यदि सकार या त वर्ग के साथ ष् या ट वर्ग आये तो सकार और त वर्ग के स्थान में क्रम से ष् और ट वर्ग हो जाते हैं; **जैसे–**

रामस्	+	षष्ठः	=	रामष्षष्ठः	(राम छठा है)
रामस्	+	टीकते	=	रामष्टीकते	(राम जाता है)
तत्	+	टीका	=	तट्टीका	(उसकी टीका या व्याख्या)
चक्रिन्	+	ढौकसे	=	चक्रिण्ढौकसे	(हे कृष्ण! तू जाता है)

(३) झलां जश् झशि

झल् (अर्थात् अन्त:स्थ–य र ल व और अनुनासिक व्यञ्जन को छोड़कर और किसी व्यञ्जन के पश्चात् झश् (किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण) आवे तो पहले वाले व्यञ्जन जश् (ज् ब् ग् ड् द्) में बदल जाते हैं, **जैसे–**

दोघ् + धा = दोग्धा
लभ् + ध: = लब्ध:
योध् + धा = योद्धा

(४) खरि च

यदि झल् प्रत्याहारवाले वर्ण के आगे खर् प्रत्याहार के वर्ण (वर्णों का प्रथम, द्वितीय तथा श् ष् स् में से कोई) हो तो झल् के स्थान पर चर् प्रत्याहार के अक्षर (क् च् ट् त् प्) हो जाते हैं, जैसे–

विपद् + काल: = विपत्काल:
सम्पद् + समय: = सम्पत्समय:
ककुभ् + प्रान्त: = ककुप्प्रान्त:।

(५) मोऽनुस्वार:

यदि किसी पद के अन्त में म् आया हो और उसके बाद कोई व्यञ्जन वर्ण हो तो उसके स्थान में अनुस्वार हो जाता है; **जैसे–**

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
गृहम् + गच्छति = गृहं गच्छति
दु:खम् + प्राप्नोति = दु:खं प्राप्नोति

(६) तोर्लि

यदि त वर्ग के किसी वर्ण से परे ल हो तो त वर्गीय वर्ण के स्थान पर ल् हो जाता है। **जैसे–**

उद् + लिखितम् = उल्लिखितम् उद् + लेख: = उल्लेख:
तद् + लीन: = तल्लीन: विद्वान + लिखति = विद्वांल्लिखति

विशेष–अनुनासिक न् के स्थान में अनुनासिक ल् होता है।

(७) अनुस्वारस्य ययि परसवर्ण:–

यदि अनुस्वार से परे यय् प्रत्याहार का वर्ण (श, ष, स, ह को छोड़कर) हो तो अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण (अग्रिम वर्ण का सवर्ण, वर्ग का पाँचवाँ वर्ण) हो जाता है। **जैसे–**

धनम् + जय: (मोऽनुस्वार:) धनं + जय: = धनञ्जय:
त्वम् + करोषि (मोऽनुस्वार:) त्वं + करोषि = त्वङ्करोषि
त्वाम् + पश्यामि (मोऽनुस्वार:) त्वां + पश्यामि = त्वाम्पश्यामि

विसर्ग सन्धि

विसर्ग (:) के आगे स्वर या व्यञ्जन वर्ण होने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं–

(१) विसर्जनीयस्य स:

विसर्ग के बाद यदि 'खर्' प्रत्याहार का कोई वर्ण (वर्गों का प्रथम, द्वितीय तथा श्, ष्, स्) रहे तो विसर्ग के स्थान में स् हो जाता है **जैसे–**

हरि: + चरति = हरिस् + चरति = हरिश्चरति
नर: + चलति = नरस् + चलति = नरश्चलति
पूर्ण: + चन्द्र: = पूर्णस् + चन्द्र: = पूर्णश्चन्द्र:
गौ: + चरति = गौस् + चरति = गौश्चरति
प्रभु: + चलति = प्रभुस् + चलति = प्रभुश्चलति

उपर्युक्त उदाहरणों में विसर्ग को स् होने के बाद 'स्तो: श्चुनाश्चु:' के द्वारा स् का श् हो गया है।

(२) ससजुषो रु: (खरवसानयोर्विसर्जनीय:)

पदान्त स् तथा सजुष् शब्द के ष् के स्थान में र् (रु) हो जाता है। इस पदान्त र् के बाद खर् प्रत्याहार (वर्गों के प्रथम, द्वितीय

और श् ष् स्) का कोई अक्षर हो अथवा कोई भी वर्ण न हो तो र् के स्थान में विसर्ग हो जाता है। **जैसे–**

रामस् + पठति > रामर् + पठति = रामः पठति।
सजुष् > सजुर् = सजुः।

(३) अतो रोरप्लुतादप्लुते

अलुप्त अत् (ह्रस्व 'अ') से परे रु (र्) के स्थान पर उ हो जाता है, यदि उसके बाद अत् (ह्रस्व 'अ') हो। **जैसे–**

बालस + अस्ति = बाल र् + अस्ति = बाल उ + अस्ति = बालो अस्ति = बालोऽस्ति।
शिवम् + अर्च्यः = शिवर् + अर्च्यः = शिव उ + अर्च्यः = शिवो + अर्च्यः + शिवोऽर्च्यः
मूर्खम् + अपि = मूर्ख र् + अपि = मूर्ख उ + मूर्खो अपि = मूर्खोऽपि
कस् + अपि = कर् + अपि = क उ + अपि = को + अपि = कोऽपि

यहाँ सर्वत्र पहले स् को रु (र्) हुआ है, तदनन्तर 'र्' को उ हुआ है, फिर गुण ओ हुआ है और अन्त में पूर्वरूप हुआ है। इसी प्रकार रामोऽस्ति, एषोऽब्रवीत, सोऽपि आदि में समझना चाहिए।

(४) (हशि च)

अलुप्त अत् (ह्रस्व 'अ') से परे रु (र्) को 'उ' हो जाता है, यदि हश् (ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, ध, द, ध, ज, ब, भ, ङ, द) परे हो। **उदाहरण–**

बालः + गच्छति = बालो गच्छति
मूर्खः + याति = मूर्खो याति
कृष्णः + नमति = कृष्णो नमति
छात्रः + गृहणाति = छात्रो गृहणाति
शिवः + वन्द्यः = शिवोवन्द्यः

यहाँ सर्वत्र सर्व प्रथम विसर्ग को 'स' फिर 'स्' को रु (र्) होता है, फिर गुण 'ओ' हो जाता है।

(५) (रोरि)

यदि र् से परे र हो तो पूर्व र् का लोप हो जाता है। उस लुप्त 'र्' से पहले यदि अ, इ, उ हो तो उनका दीर्घ हो जाता है। **जैसे–**

गौर् + रम्भते = गौ रम्भते।
पुनर् + रमते = पुनारमते।
हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः।
३हरेर् + रमणम् = हरे रमणम्।

(ख) शब्द-रूप

संज्ञा-शब्द

(१) आत्मन् (आत्मा) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मानः!

(२) राजन् (राजा) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजान:
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञ:
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य:
पञ्चमी	राज्ञ:	राजभ्याम्	राजभ्य:
षष्ठी	राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि]	राज्ञो:	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजान:!

(३) सरित् (नदी) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्, सरिद्	सरितौ	सरित:
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरित:
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भि:
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्य:
पञ्चमी	सरित:	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्य:
षष्ठी	सरित:	सरितो:	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितो:	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्, हे सरिद्!	हे सरितौ!	हे सरित:!

(४) नामन् (नाम) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभि:
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्य:
पञ्चमी	नाम्न:	नामभ्याम्	नामभ्य:
षष्ठी	नाम्न:	नाम्नो:	नाम्नाम्
सप्तमी	नाम्नि, नामनि	नाम्नो:	नामसु
सम्बोधन	हे नाम, नामन्!	हे नाम्नी, नामनी!	हे नामानि!

(५) जगत् (संसार) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भि:
चतुर्थी	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्य:
पञ्चमी	जगत:	जगद्भ्याम्	जगद्भ्य:
षष्ठी	जगत:	जगतो:	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतो:	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

सर्वनाम-शब्द

(६) सर्व (सब) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	हे सर्व!	हे सर्वौ!	हे सर्वे!

सर्व
स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सम्बोधन	हे सर्वा!	हे सर्वे!	हे सर्वाः!

सर्व
नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	हे सर्वम्!	हे सर्वे!	हे सर्वाणि!

(७) यद् (जो) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्, यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यद्
स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यद्
नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्, यद्	ये	यानि
द्वितीया	यत्, यद्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्, यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

(८) इदम् (यह) पुँलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्, अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

इदम्
स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

इदम्
नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्, अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

(ग) धातु-रूप

परस्मैपदी धातु

(१) स्था (ठहरना)

वर्तमान–लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

आज्ञा–लोट् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

भूतकाल–लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

चाहिए–विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

सामान्य भविष्यत् – लृट् लकार

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

(२) पा (पिब्) पीना

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबत:	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथ:	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबाव:	पिबाम:

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिब:	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयु:
मध्यम पुरुष	पिबे:	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

(३) कृ (करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथ:	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्व:	कुर्म:

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	करोतु, कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु, कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:
मध्यम पुरुष	कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरो:	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथ:	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्याव:	करिष्याम:

(४) नी (ले जाना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	नयति	नयत:	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथ:	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयाव:	नयाम:

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयु:
मध्यम पुरुष	नये:	नयेतम्	नयेत
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनय:	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यत:	नेष्यन्ति
मध्य पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथ:	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्याव:	नेष्याम:

(५) दा (देना)

लट्लकार

प्रथम पुरुष	ददाति	दत:	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थ:	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्व:	दद्म:

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यत:	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथ:	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्याव:	दास्याम:

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददु:
मध्यम पुरुष	अदद:	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	ददातु, दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि, दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

(६) चुर् (चोरी करना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयानि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

(घ) प्रत्यय

संस्कृत में प्रत्यय लगाकर नये शब्दों का निर्माण होता है। प्रत्यय धातु या शब्दों के बाद लगते हैं। प्रत्यय मुख्यतः **कृत** और **तद्धित** दो प्रकार के होते हैं। यहाँ पर कतिपय प्रत्ययों का परिचय दिया जा रहा है।

(१) कृदन्त (कृत्) प्रत्यय– जहाँ किसी धातु में प्रत्यय जोड़कर नवीन शब्दों का निर्माण किया जाता है, वहाँ कृदन्त (कृत) प्रत्यय होता है तथा इस प्रकार बनाये गये शब्दों को 'कृदन्त' कहा जाता है।

(अ) क्त (त)– भूतकालिक क्रिया तथा विशेषण शब्द बनाने के लिए क्त प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। क्त प्रत्यय भाव और कर्म में होता है अर्थात् कर्त्ता में तृतीया तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के पुरुष, वचन और लिङ्ग के अनुसार होती है। हृतः, दत्तः, लब्धः, कथितः, गतः, प्रेषितः आदि शब्द क्त (त) प्रत्यय के उदाहरण हैं। **जैसे–**

(क) मया पत्रं प्रेषितम् (मैंने पत्र भेजा) (ख) गुरुणा आदेश: दत्त: (गुरुजी ने आदेश दिया)

(ब) क्त्वा (त्वा)– जब किसी क्रिया के हो जाने पर दूसरी क्रिया आरम्भ होती है, तब सम्पन्न हुई क्रिया को 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं। हिन्दी में इसका बोध **'करके'** लगाकर होता है। पूर्वकालिक क्रिया का बोध कराने के लिए संस्कृत में धातु के आगे क्त्वा (त्वा) प्रत्यय जोड़ा जाता है। **जैसे–**

धातु		प्रत्यय		कृदन्त
कृ	+	क्त्वा	=	कृत्वा
दा	+	क्त्वा	=	दत्वा
गम्	+	क्त्वा	=	गत्वा
नी	+	क्त्वा	=	नीत्वा
पठ्	+	क्त्वा	=	पठित्वा
दृश्	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा

(स) तव्यत् (तव्य), अनीयर् (अनीय)

क्रिया में 'चाहिए अर्थ के लिए तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जैसे–

श्रु + तव्यत् (तक) = श्रोतव्यम् (सुनना चाहिए)।

दा + तव्यत् (तक) = दातव्य:।

पठ् + तव्यत् (तक) = पठितव्य (पढ़नी चाहिए)।

पठ् + अनीयर् (अनीय) = पठनीय (पढ़नी चाहिए या पढ़ने योग्य)।

गम् + अनीयर् (अनीय) = गमनीयम्।

मया पुस्तकं पठितव्यम् (पठनीयम्) = मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए।

पा + अनीयर् = पानीयम् (पीने योग्य)।

कृ + अनीयर् = करणीय: (करने योग्य)।

दृश् + अनीयर् = दर्शनीय:।

(२) तद्धित प्रत्यय– जहाँ किसी शब्द में प्रत्यय जोड़कर नवीन शब्दों का निर्माण किया जाय, वहाँ तद्धित प्रत्यय होता है।

(अ) त्व, तल– संज्ञा और विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए त्व और तल् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। **जैसे–**

(क) महत्– महत्त्व, महत्ता।

(ख) प्रभु– प्रभुत्व, प्रभुता।

(ग) गुरु– गुरुत्व, गुरुता।

(घ) कटु– कटुत्व, कटुता।

(ङ) पशु– पशुत्व, पशुता।

(च) दीन– दीनत्व, दीनता।

(ब) मतुप्, वतुप्– संज्ञा से 'वाला' अर्थ प्रकट करनेवाले विशेषण बनाने के लिए मतुप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। मतुप् का 'मत्' कभी-कभी 'वत्' भी हो जाता है। ये शब्द विशेषण होते हैं तथा इनके रूपों में विशेष्य के अनुसार लिङ्ग, वचन और विभक्ति आते हैं। **जैसे–**

						पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
●	बल	+ वतुप्	→	बलवत्	=	बलवान्	बलवती
●	श्री	+ मतुप्	→	श्रीमत्	=	श्रीमान्	श्रीमती
●	भग	+ वतुप्	→	भगवत्	=	भगवान्	भगवती
●	धी	+ मतुप्	→	धीमत्	=	धीमान्	धीमती

- गुण + वतुप् → गुणवत् = गुणवान् गुणवती
- रस + वतुप् → रसवत् = रसवान् रसवती
- पुत्र + वतुप् → पुत्रवत् = पुत्रवान् पुत्रवती
- धन + वतुप् → धनवत् = धनवान् धनवती

(ङ) विभक्ति-परिचय

(१) अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि।

अभितः (चारों ओर), परितः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (शोक के लिए प्रयुक्त), प्रति (ओर) शब्दों के योग में **द्वितीया विभक्ति** होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) ग्रामम् अभितः (परितः) वृक्षाः सन्ति। (गाँव के चारों ओर वृक्ष हैं।)
(ख) ग्रामम् समया विद्यालयः अस्ति। (गाँव के समीप विद्यालय है।)
(ग) हा दुष्टम्। (हाय दुष्ट)
(घ) विद्यालयम् निकषा। (विद्यालय के समीप।)
(ङ) गृहं परितः। (घर के चारों ओर।)
(च) विद्यालयं निकषा जलाशयः अस्ति। (विद्यालय के समीप जलाशय है।)
(छ) कृष्णं परितः गावः सन्ति। (कृष्ण के चारों ओर गायें हैं।)
(ज) परितः कृष्णम्। (कृष्ण के चारों ओर)
(झ) विद्यालयं परितः उद्यानमस्ति। (विद्यालय के चारों ओर उद्यान हैं)

(२) येनाङ्गविकारः

जिस विकृत अंग के द्वारा अंगी (अंगोंवाला) का विकार लक्षित होता है, उस अंग में **तृतीया विभक्ति** होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) दिनेशः पादेन खञ्जः अस्ति। (दिनेश पैर से लँगड़ा है।)
(ख) मोहनः नेत्रेण काणः अस्ति। (मोहन नेत्र से काना है।)
(ग) अक्ष्णा काणः। (आँख का काना।)
(घ) सुरेशः शिरसा खल्वाटः। (सुरेश सिर से गंजा है।)
(ङ) पादेन खञ्जः। (पैर से लँगड़ा।)
(च) कर्णेन बधिरः। (कान से बहरा।)
(छ) भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति। (भिक्षुक पैर से लँगड़ा है।)
(ज) देवदत्तः नेत्रेण काणः अस्ति। (देवदत्त आँख से काना है।)
(झ) आदर्शः पादेनखञ्जः अस्ति। (आदर्श पैर से लँगड़ा है।)

(३) सहयुक्तेऽप्रधाने।

सह के योग में अप्रधान (जो प्रधान क्रिया के कर्त्ता का साथ देता है) में **तृतीया विभक्ति** होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) सुनीता पुत्रेण सह गच्छति। (सुनीता पुत्र के साथ जाती है।)
(ख) पुत्रेण सह पिता गच्छति। (पुत्र के साथ पिता जाता है।)

(ग) रामेण सह सीता वनम् अगच्छत्। (राम के साथ सीता वन को गयी।)
(घ) रामः लक्ष्मणेन सह गच्छति। (राम लक्ष्मण के साथ जाते हैं।)
(ङ) गुरुणा सह शिष्यः अपि आगच्छति। (गुरु के साथ शिष्य भी आता है।)

(४) नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषट्योगाच्च।

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् शब्दों के योग में **चतुर्थी विभक्ति** होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) श्री गणेशाय नमः। (गणेश जी को नमस्कार।)
(ख) तस्मै श्रीगुरवे नमः। (उन गुरु को नमस्कार।)
(ग) रामाय स्वाहा। (राम के लिए स्वाहा।)
(घ) इन्द्राय वषट्। (इन्द्र के लिए भेंट।)
(ङ) स्वस्ति तुभ्यम्। (तुम्हारा कल्याण हो।)
(च) शुकदेवाय नमः। (शुकदेव को नमस्कार।)
(छ) सूर्याय स्वाहा। (सूर्य के लिए स्वाहा।)
(ज) प्रजाभ्यः स्वस्ति। (प्रजा का कल्याण हो।)
(झ) पुत्राय स्वस्ति। (पुत्र का कल्याण हो।)
(ञ) दुर्गायै स्वाहा। (दुर्गा के लिए स्वाहा।)
(ट) कृष्णाय नमः। (कृष्ण को नमस्कार।)
(ठ) राधावल्लभाय नमः। (राधावल्लभ को नमस्कार)

(५) षष्ठी शेषे

जहाँ स्वामी तथा सेवक, जन्य तथा जनक, कार्य तथा कारण इत्यादि के मध्य कोई सम्बन्ध दिखाये जाते हैं, वहाँ **षष्ठी विभक्ति** होती है। इस सूत्र का अर्थ है कि अन्य विभक्तियों के आधार पर न बतायी जा सकने वाली बातों को बताने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ–

(क) कृष्णस्य पुस्तकम्। (कृष्ण की पुस्तक।)
(ख) राज्ञः पुरुषः। (राजा का पुरुष।)
(ग) रामस्य माता। (राम की माता।)
(घ) सुदामा कृष्णस्य मित्रम् आसीत्। (सुदामा कृष्ण के मित्र थे।)
(ङ) कवीनाम् कालिदासः श्रेष्ठः। (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।)
(च) सुमित्रा लक्ष्मणस्य माता अस्ति। (सुमित्रा लक्ष्मण की माता है।)
(छ) कृष्णस्य पिता वसुदेवः। (कृष्ण के पिता वसुदेव।)

(६) यतश्च निर्धारणम्

यदि किसी की अपने समुदाय में विशिष्टता दिखायी जाती है तो उस समुदायवाचक शब्द में **षष्ठी** या **सप्तमी** विभक्ति होती है।

उदाहरणार्थ–

(क) यशः छात्राणां श्रेष्ठः। (यश छात्रों में श्रेष्ठ है।)
(ख) गोषु वा कपिला श्रेष्ठा। (गायों में कपिला श्रेष्ठ है।)
(ग) बालकेषु सौरभः श्रेष्ठः। (बालकों में सौरभ श्रेष्ठ है।)

(घ) नदीनां वा गङ्गा श्रेष्ठा। (नदियों में गंगा श्रेष्ठ है।)
(ङ) छात्रासु स्वाती श्रेष्ठा। (छात्राओं में स्वाती श्रेष्ठ है।)
(च) काव्येषु नाटकं रम्यं। (काव्यों में नाटक सुन्दर होता है।) [

(च) समास

दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) के मेल से एक नवीन शब्द के निर्माण की प्रक्रिया को 'समास' कहा जाता है। जैसे पीतम् अम्बरं यस्य सः (पीले हैं वस्त्र जिसके)। इन शब्दों को मिलाकर एक सामासिक पद बनाया जाता है– पीताम्बरः।

समस्त-पद– समास के नियम से मिले हुए शब्द-समूह को 'समस्त-पद' कहते हैं, जैसे– 'पीताम्बरः' समस्त-पद है।

विग्रह– समास के अर्थ-बोधक वाक्य को 'विग्रह' कहते हैं; जैसे–पीतम् अम्बरं यस्य सः।

सामान्यतया समास के छह भेद हैं– अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व।

पाठ्यक्रमानुसार निम्नलिखित तीन समासों का विवरण दिया जा रहा है।

(१) अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्व पद अव्यय हो और उसी के अर्थ की प्रधानता हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इसमें पहला पद अव्यय होता है और दूसरा संज्ञा। समस्त-पद अव्यय हो जाता है। अव्ययीभाव का नपुंसकलिङ्ग एकवचन में रूप बनता है।

उदाहरणार्थ–

	समस्त-पद	समास-विग्रह	हिन्दी-अर्थ
(१)	अनुदिनम्	दिनस्य पश्चात्	दिन के पश्चात्
(२)	प्रतिदिनम्	दिनं दिनंप्रति	प्रत्येक दिन
(३)	उपगङ्गम्	गङ्गायाः समीपम्	गंगा के समीप
(४)	उपतटम्	तटस्य समीपे	तट के समीप
(५)	सहरि	हरेः सादृश्यम्	हरि के सदृश
(६)	प्रत्यक्षं	अक्ष्णः प्रति	आँखों के सामने
(७)	अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम्	रूप के योग्य
(८)	यथाशक्तिः	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति के अनुसार
(९)	प्रत्येकः	एकं-एकं प्रति	हर एक
(१०)	यथाकामम्	कामम् अनतिक्रम्य	काम के अनुसार

(२) कर्मधारय समास

जिस समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है, वहाँ 'कर्मधारय समास' होता है।

उदाहरणार्थ–

	समस्त-पद	समास-विग्रह	हिन्दी-अर्थ
(१)	कृष्णसर्पः	कृष्णः सर्पः	काला साँप
(२)	नीलकमलम्	नीलम् कमलम्	नीला कमल
(३)	श्वेताम्बरं	श्वेतम् अम्बरम्	सफेद वस्त्र
(४)	घनश्यामः	घन इव श्यामः	घन के समान श्याम
(५)	पुरुषव्याघ्रः	पुरुष एव व्याघ्रः	पुरुषरूपी व्याघ्र

(६)	सज्जनः	सत्यः जनः	सच्चा व्यक्ति
(७)	कुपुत्रः	कुत्सित पुत्रः	बुरा पुत्र
(८)	रक्तवस्त्रम्	रक्तम् वस्त्रम्	लाल वस्त्र
(९)	नीलाश्वः	नीलः अश्वः	नीला घोड़ा
(१०)	पीतकमलम्	पीतम् कमलम्	पीला कमल
(११)	रक्ताम्बरम्	रक्तं अम्बरम्	लाल वस्त्र
(१२)	पीतवस्त्रम्	पीतं वस्त्रम्	पीला वस्त्र
(१३)	नीलाम्बुजम्	नीलं अम्बुजम्	नीला कमल
(१४)	महाजनः	महान् चासौ जनः	महान् जन
(१५)	विद्याधनम्	विद्या एव धनम्	विद्यारूपी धन
(१६)	महात्मा	महान् चासौ आत्मा	महान् आत्मा

(३) बहुव्रीहि समास

जब दोनों समस्त-पदों में से किसी भी पद के अर्थ की प्रधानता नहीं होती, वरन् ये किसी अन्य पद के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं और उसी पद के अर्थ की प्रधानता होती है, तब वहाँ 'बहुव्रीहि समास' होता है। इसमें विग्रह करते समय 'यत्' शब्द के रूपों (यस्य, येन, यस्मै आदि) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरणार्थ–

	समस्त-पद	समास-विग्रह	हिन्दी-अर्थ
(१)	महात्मा	महान आत्मा यस्य सः	जिसकी आत्मा महान् हो वह
(२)	त्रिनेत्रः	त्रय नेत्राणि यस्य सः	तीन नेत्र हैं जिसके
(३)	लम्बोदरः	लम्बम् उदरं यस्य सः	लम्बा है उदर जिसका
(४)	गजाननः	गजः इव आननः यस्य सः	गज के समान मुख है जिसका
(५)	महाधनः	महान् धनः यस्य सः	महान् धन है जिसका वह
(६)	गदाहस्तः	गदा हस्ते यस्य सः	गदा है हाथ में जिसके वह
(७)	पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः	पीले हैं वस्त्र जिसके
(८)	दशाननः	दश आननानि यस्य सः	दस मुख हैं जिसके
(९)	यशपाणिः	यशं पाणौ यस्य सः	यश है हाथ में जिसके
(१०)	जितेन्द्रियः	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	जीत ली हैं इन्द्रियाँ जिसने
(११)	चक्रपाणिः	चक्रं पाणौ यस्य सः	चक्र है हाथ जिसका
(१२)	चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः	चन्द्र है जिसके शेखर पर
(१३)	नीलकण्ठः	नीलः कण्ठः यस्य सः	नीला है कण्ठ जिसका
(१४)	वीणापाणिः	वीणा पाणौ यस्य सः	वीणा है हाथ में जिसके
(१५)	जितेन्द्रिय	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	जिसने इन्द्रियों को जीत लिया है

●●